

**भारतीय संस्कृति को समझने के लिए संस्कृत जानना आवश्यक है - राज्यपाल**

लखनऊ: 28 जनवरी, 2018

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने आज लखनऊ के महानगर में संस्कृत भारतीय एवं उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संस्कृत सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि संस्कृत को विश्व की प्राचीनतम भाषा कहा जाता है पर इतनी आधुनिक है कि उसे कम्प्यूटर फ्रेंडली कहते हैं। संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। भारतीय संस्कृति को समझने के लिए संस्कृत जानना आवश्यक है क्योंकि ज्यादातर प्राचीन ग्रंथ जैसे रामायण, महाभारत, वेद, गीता, उपनिषद, आयुर्वेद आदि संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं। संस्कृत हमारी वैचारिक परम्परा, जीवन दर्शन, मूल्यों व सूक्ष्म चिन्तन की वाहिनी रही है। उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा की शुद्धता तथा कम शब्दों में अपनी बात कहने की शक्ति अद्भुत है।

राज्यपाल ने कहा कि 'मैं संस्कृत का विद्वान नहीं हूँ। उसके प्रति आदर है, उसी आदर को व्यक्त करने के लिए कार्यक्रम में आया हूँ। 1989 में जब मैं पहली बार लोकसभा में सांसद चुनकर गया था तब अपने 23 साथियों के साथ मैंने संस्कृत में शपथ ली थी। संस्कृत से प्रेम है। कई श्लोक व शब्द याद हैं, उनका प्रयोग भी करता हूँ।' उनके संस्मरणों पर आधारित मराठी भाषा की पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' का शीर्षक भी संस्कृत भाषा से लिया गया है। हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू एवं गुजराती भाषा के बाद शीघ्र ही उनका संस्मरण संस्कृत भाषा में प्रकाशित हो रहा है। संस्कृति का पोषण संस्कृत भाषा से होता है। उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा की उपयोगिता और उसके महत्व को लोगों तक पहुंचाया जाये जिससे वह संस्कृत भाषा को समझे और ज्ञान प्राप्त कर सकें।

श्री नाईक ने संस्कृत श्लोकों और शब्दों की सहजता पर चर्चा करते हुये कहा कि लोकसभा के द्वार पर 'अयं निजः परो वेति', लोकसभा अध्यक्ष के आसन पर 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय', मुंबई पुलिस के 'सद रक्षणाय, खल निग्रहाय', जीवन बीमा पालिसी के 'योग क्षेमं बहाम्यहम्', डाक विभाग के 'अहर्निशं सेवामहे', उच्चतम न्यायालय के 'यतो धर्मस्ततो जयः', भारत सरकार के 'सत्यमेव जयते', दूरदर्शन के 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' आदि घोष वाक्यों से पता चलता है कि संस्कृत आम बोलचाल में भी प्रयोग होती है और सहज भाषा है। संस्कृत भाषा की विशेषता है कि गंभीर विषय भी सहजता से व्यक्त किये जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा अपने विशाल साहित्य, लोकहित की भावना तथा उपसर्गों के द्वारा नये शब्दों के निर्माण की क्षमता के कारण आज भी अमर है।

राज्यपाल ने इस अवसर पर लगायी गयी प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। प्रदर्शनी की विशेषता यह रही कि इसमें फलों, सब्जियों, खाद्य सामग्री, आभूषणों, वस्त्रों एवं पशुओं को उनके संस्कृत नाम से दर्शाया गया था। संस्था द्वारा राज्यपाल का अंग वस्त्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मान भी किया गया।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष डा० वाचस्पति मिश्र, संस्कृत भारती के प्रांतीय अध्यक्ष श्री शोभन लाल उकिल, रिजर्वनेशन संस्था के अध्यक्ष श्री समीर नेवटिया, अखिल भारतीय महामंत्री संस्कृत भारती श्री श्रीश देवपुजारी सहित अन्य विशिष्टजन उपस्थित थे। कार्यक्रम में अन्य लोगों ने भी अपने विचार रखे।

-----

अंजुम/ललित/राजभवन (37/37)



